SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महिलाओं के विरूद्ध हिंसा : सामाजिक परिपेक्ष्य में

मनीषा, शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

शोध सार

भारत एक बहुलतावादी वाला राष्ट्र है। यहाँ अनेक स्तरों पर विविधता प्राप्त होती है। भारतीय आबादी का लगभग आधा हिस्सा आधी आबादी के नाम से भी जाना जाता है जो कि स्त्रियों का है। परन्तु स्वतन्त्रता के 74 वर्ष के पश्चात् भी यह अत्यन्त हेय विषय है कि स्त्रियों को अभी भी समाज में बराबरी का दर्जा प्राप्त नही हो पाया है और न ही उनकी शिक्षा–दीक्षा में जितना सुधार आना चाहिए था वह हुआ है। प्रारम्भ में ही स्त्री को दया और विनम्रता की प्रतिमूर्ति के रूप में रूपांत्रीत किया गया है। अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ''आँचल में दुध और आँखों में पानी'' परन्तु स्त्रियों की यह दशा अब स्वीकार नही है क्योंकि किसी भी प्रगतिशील और सभ्य समाज का मापक वहाँ की स्त्रियों को स्थिति पर निर्भर होती है। अतः वर्तमान समय में आवश्यकता है कि स्त्रियों को वह स्थान प्राप्त हो जिसकी वे योग्यता रखती है।

मुख्य शब्द

सामाजिक बुराई, स्त्री शोषण, स्त्री शिक्षा।

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
मनीषा, शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/12/2020
Revised on : -----
Accepted on : 24/12/2020
Plagiarism : 02% on 17/12/2020

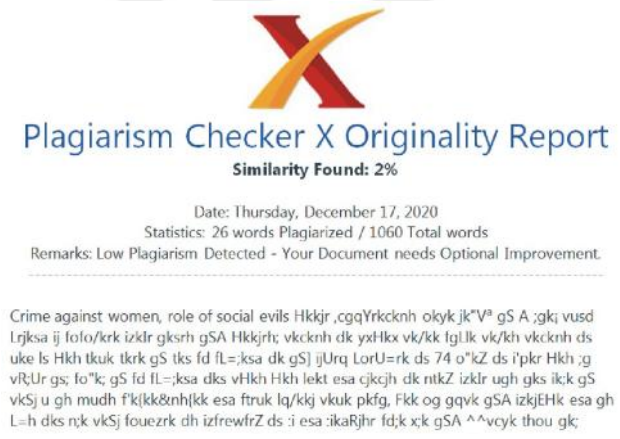
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Thursday, December 17, 2020
Statistics: 26 words Plagiarized / 1060 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Crime against women, role of social evils Hkkjr ,oa Yrkcknh okyk jk"V³ gS A ;gk¡ vusd Lrjksa ij fofo/krk izdkj gksrh gSA Hkkjrh; vkcknh dk yxHkx vk/kk fgLlk vk/kh vkcknh ds uke ls Hkh tkuk tkrk gS tks fd fL=;ksa dk gS] ijUrq LorU=rk ds 74 o"kZ ds i'pkr Hkh ;g vR;Ur gs; fo"k; gS fd fL=;ksa dks vHkh Hkh lekt esa cjkcjh dk ntkZ izdkr ugh gks ik;k gS vkSj u gh mudh f'k{kk&nh{kk esa ftruk lq/kkj vkuk pkfg, Fkk og gqvk gSA izkjEHk esa gh L=h dks n;k vkSj fouezrk dh izfrewfrZ ds :i esa :ikaRjhr fd;k x;k gSA ^^vcyk thou gk;

आज हमारा समाज, हमारा देश इतना आगे बढ़ गया है, जहाँ स्त्रियां इतनी शिक्षित है कि वो हर क्षेत्र के पुरूषो के साथ कदम से कदम मिलाकर चला रही है। फिर भी हमारे समाज में स्त्रियों पर बढ़ता अत्याचार चाहे वह घर में हो या बाहर हो इस कारण से उनमें तनाव का माहौल बढ़ता जा रहा है।

समाज में बढ़ते हुए अपराधो के कारण हमेशा स्त्रियां डरी और सहमी रहती है, स्त्रियों के इतना पढ़ने–लिखने के बावजूद दहेज जैसी कुप्रथा उनका पीछा नही छोड़ रही है। आज हमारा देश हो या समाज आगे बढ़ता जा रहा है, लेकिन वही मनुष्य के मानसिकता इतनी खराब हो गई है कि वो स्त्रियों को कुछ समझता ही नही है। उसे वह खरीदी हुई वस्तु समझकर उसपर

अपना मनमाना विचार कहे या उसपर अत्याचार के रूप में मारपीट एवं बुरा व्यवहार करता है, जिससे स्त्रियाँ अधिकतर तनाव में रहती है।

स्त्रियाँ आज के माहौल के देखते हुए भी तनाव में रहती है और इसका एक सबसे बड़ा मुख्य कारण बढ़ती हुई रेप कांड। आज जिस घर में लड़कियाँ है, उनकी माँ उन्हे बाहर भेजने से भी डरती है और इसका सबसे बड़ा उदाहरण निर्भया कांड है। यह कांड हुआ हमारे दिल्ली शहर में, लेकिन पूरे देश–विदेश में डर का माहौल बना दिया है। हर स्त्री व लड़की के अंदर डर के साथ–साथ तनाव में भी है। डर इस बात का है कि कब माहौल खराब हो जाए और इनके अंदर तनाव इस बात का है कि उनकी बच्ची या वो खुद इससे बची नही रह सकती है। आज समाज में रहने वालो कुछ लोगों की मानसिकता इतनी खराब हो गई कि वे इस मानसिक बीमारी से ग्रस्त है और जिसका हर्जाना महिलाओं को उठाना पड़ता है।

महिलाओं में बढ़ी तनाव का मुख्य कारण घरेलू हिंसा है। आए दिन सुनने में आता है कि, महिलाओं को दहेज के लिए परेशान किया गया, कामों के लिए या फिर पति द्वारा हर बात पर पिटना, शराब पीकर आना ये सब महिलाओं के तनाव का कारण है।

महिलाओं में बढ़ते तनाव का सबसे बड़ा मुख्य कारण उनके साथ बढ़ते अपराधों का है। महिलाओं में तनाव का एक मुख्य कारण बच्चों को उनकी योग्यता के अनुसार शिक्षा प्रदान न कर पाना जिस कारण आज बच्चे दुनियाँ के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने मे पीछे रह जाते है।

अपने कार्य क्षेत्र में आगे बढ़ने के क्रम में पुरूष द्वारा नीचा दिखाना या अपने कार्य क्षेत्र में कैसे आगे बढ़ा जाए यह उनके तनाव का मुख्य कारण है। उनकी आर्थिक स्थिति भी कभी कभी तनाव का मुख्य कारण के लेती है। आज ही नही बल्कि पुराने जमाने से महिलाओं में तनाव बना रहा है। इसका एक मुख्य उदाहरण द्रौपदी के साथ जब राज्य सभा मे उनके साथ अपराध किया गया था तब उन्होनें मानसिक और अपमानित महसुस किया, जिससे उनके अंदर कुण्ठा के साथ तनाव भी उत्पन्न हो गया।

इसलिए कहा जा सकता है कि तनाव का मुख्य कारण गरीबी ही नही बल्कि उनके साथ हो रहे दुर्व्यवहार भी है।

उस राज्यसभा में जब द्रौपदी के साथ वैसा हुआ तो उसे देखकर श्री कृष्ण ने अपने दिल की व्यथा कहें या अपमान से शर्मसार द्रौपदी की प्रति करूणा कहें, उन्होंने हमारे समाज से कुछ सवाल कियें जिसे उन्होने कुछ लाइनों में इस तरह व्यक्त किया हैं ''मनुष्य ने समाज में स्त्रियों को सदा शोषण अन्याय और अपमान दियें है।'' आप अपने आस–पास दृष्टि डालिये, समग्र इतिहास को देखियें तो यह दिखाई देगा कि पुरूषों की ईष्या, अहंकार, लालसा, वैर इन सभी जुड़ी भावनाओं का परिणाम स्त्रियाँ भोगती है। युद्ध पुरूष करता है और पराजय होने पर विजयी पक्ष द्वारा नगर की स्त्रियों के साथ बलात्कार किया जाता है। पुरूष मदिरा और जुएं में अपनी सम्पत्ति गवांता है। पुरूष का अहंकार जागता है और स्त्रियों की स्वतंत्रता और सुख में बाधा उत्पन्न हो जाती है। पुरूष जीवन से परे परिवार का त्याग करता है और स्त्रियाँ अपने नन्हें–मुन्ने शिशुओं का पेट भरने के लिये संघर्ष करती है। सारे संसार के दुःखो की गिनती किजिए बस दिखाई देगा कि पुरूषों की तुलना में स्त्रियां कही अधिक तनाव और दुःख भोगती है।

यह किस प्रकार के समाज की रचना की है, हमने जहाँ मनुष्य जाति का आधा भाग दुसरे भाग को कुचलता रहता है। वही कुचलती हुई स्त्रियां उसी के समक्ष मनुष्य के समस्त भविष्य को जन्म देती है।

सृष्टि को देखिये नई वृक्षों को जन्म देने वाले बीज के आसपास ईश्वर ने फूलो की पंखुरियाँ निर्मित की है उसे रंग और सुगंध से भर दिया। जहाँ भविष्य का जन्म होता है वहाँ केवल सुन्दरता, केवल सुख, संतोष और सम्मान होना आवश्यक है।

परन्तु समाज स्त्रियों को दुःख तनाव देखकर सारे भविष्य को दुःख से भरता रहता है। अपमान, शोषण, पीड़ा से झुलसी हुई स्त्रियाँ संतान को जन्म किस प्रकार दे सकती है।

अर्थात् जब–जब किसी स्त्रियों का अपमान होता है, शोषण होता है। नारी को केशों से खींचा जाता है, तब तब किसी न किसी रूप में युद्ध का जन्म होता है। किसी न किसी रूप में महाभारत होता है। स्वयं विचार कीजिए बार–बार विचार किजिए यहाँ पर महाभारत का अर्थ है बदलाव।

निष्कर्ष

लगभग सभी सामाजिक मुद्दो और समस्याओं की उत्पत्ति महिलाओं पर घरेलू हिंसा, महिलाओं के खिलाफ यौन शोषण है। यदि समाज का हर वर्ग इस कुरितियों के प्रति सजग हो तथा मन से इसका विरोध करे तो समाज की स्थिति स्वतः ही स्वस्थ हो सकती है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, रमा, मिश्रा, एम.ए., (2010), *भारतीय समाज में नारी की अवधारणात्मक स्वरूप,* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।
2. सिंह, एम.के., (2012), *भारतीय महिलायें बदलते परिवेश,* साहित्य संचय।
3. अग्रवाल, एच.ओ., (2012), *मानव अधिकार,* सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन, पंचम संस्करण।
4. नवभारत टाइम।
5. महाभारत सीरियल।

****